Impact Factor: 6.017

ISSN: 2278-9529

GALAXY

International Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed e-Journal

Vol.15, Issue- 1 January 2026

15 Years of Open Access

Editor-In-Chief: Dr. Vishwanath Bite

Managing Editor: Dr. Madhuri Bite

www.galaxyimrj.com

खोखली व्यवस्थाओं और बदलती मान्यताओं का चित्र ' काली - बिल्ली ' कहानी के संदर्भ में

डॉ. शेख शहनाज अहेमद
प्रोफेसर,
हिंदी विभागाध्यक्ष तथा शोध-निर्देशिका,
हुतात्मा जयवंतराव महाविद्यालय, हिमायतनगर, महाराष्ट्र,
जि. नांदेड - 431802 (महाराष्ट्र).

अमरीक सिंह दीप के कहानी-संग्रह 'काली बिल्ली' की लगभग सभी कहानियां समाज के अनछुए पहलूओं को उजागर करती है। इस कहानी-संग्रह की कहानियों में सामाजिक विसंगतियों, सांप्रदायिक भावनाओं खोखली व्यवस्थाओं तथा बदलती मान्यताओं का चित्रण हुआ हैं। इसमें शोषण, अत्याचार, टूटते रिश्ते, भ्रष्टाचार, स्त्री-शिक्षा, बालविवाह और आसपास घटने वाली घटनाओं को भी उजागर किया गया है। अमरीक सिंह का यह कहानी-संग्रह सन् 2010 में अरू पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संग्रह की शीर्षक कहानी है- 'काली बिल्ली' ।

लेखक अचानक काली बिल्ली को घर में देखकर डर गया है। "सांसे सन्न। रक्तसुन्न। आंखे फटी-फटी... अकस्मात् इतने महीनों बाद वह कहां से आ धमकी?"1 कहानी की शुरुआत कुछ इस तरह करते हुए वे पाठक को फ्लैशबैक में ले जाते हैं। इस कहानी की मुख्यपात्र यानी काली बिल्ली दरअसल लेखक की नौकरानी पुष्पा की बेटी अंजू का लेखक द्वारा प्यार से दिया गया नाम है "नाटा कद, नमकदार तीखा सांवला रंग, चौदहवर्ष की वय के बावजूद पूर्ण

विकसित वक्ष, छरहरा बदन। गदराया हुआ गोल चेहरा, सुदृढ़ नासिका, पीकू की फांकों से नासपाती रंग से भरे हुए रसीले होंठ तथा खूब बातूनी बड़ी-बड़ी आंखे। बिल्ली-सी चमकाती इन्हीं आंखों और उसके तीखे सांवले रंग की वजह से ही मैंने अंजू को काली बिल्ली का नाम दे डाला था।"2

अंजू का परिवार मलिन बस्ती में यानी उस जगह जहाँ कभी पर तालाब था, नगरीकरण की वजह से नगर का सारा कूड़ा-कबाड़ तालाब को भर देने के बाद, गांवों से पलायन करने वाले काम की तलाश में उस जगह को अनधिकृत रूप से कब्जाये हुए थे। अंजू की मां चार पांच घरों में बरतन मांजकर महीने में एक हजार से अधिक कमा नहीं पाती थी। अंजू के पिता सुख देव वर्षों से एक बल्ब फैक्ट्री में बल्ब बनाने का काम करते थे। वह मुश्किल से तीस-चालीस रुपये कमा लेते हैं। ऐसे में क्या खाएं और बच्चों को क्या पढ़ाए? इस गरीबी और लाचारी के साथ जिंदगी गुजारते हुए अपनी इज्जत बचाने के लिए अपनी बेटी का बालविवाह कर देते हैं जिसका लेखक विरोध करता है। लेकिन शादी होने के बाद अंजू की ससुराल वाले उस पर जुल्म करते हुए दहेज और लेनदेन के ताने मारते हैं, जिसकी वजह से पुष्पा अंजू को वापस अपने घर लाती है। अंजू यानि काली बिल्ली उसी मलिन बस्ती के एक आवारा लडके के प्यार में फंस जाती है और वह भी ब्याह के बाद। लेखक इस समस्या का समाधान कुछ नहीं निकाल पाता। बस रात के नौ बजने का बहाना बनाते हुए अपने घर को पलायन करता है। इस कहानी में लेखक ने बालविवाह पर यह टिप्पणी की है

कि केवल कानून बना लेने से यह प्रथा खत्म नहीं होगी। जरूरत है स्त्री-शिक्षा और गरीबों की गरीबी दूर करने की। लेखक अपने आपको इस कहानी से जोडते हुए अपनी घर की नौकरानी पुष्पा की बेटी अंजू (काली बिल्ली) के माध्यम से यह दर्शाता है कि गरीब लोग हालात के हाथों मजबर हैं। "मलिन बस्तियाँ जिसमें दुनिया भर की सारी गंदगी, भूख, बेकारी, बीमारी, लाचारी, गुंडई लफंगई, लौंडियाबाजी, बाँडेबाजी, दारूबाजी, जुएबाजी... ऐसी कौन-सी बुराई हैं जो नहीं है वहाँ। बस्ती के बच्चे सरकारी स्कूल में मिडडे मील के लालच में कक्षा पांच तक ही किसी तरह पढ पाते हैं। पढाई छूटते ही जरा बड़े होने पर कुछ लड़के छोटे-मोटे काम-धंधों पर लग जाते हैं, लड़कियां बंगलों मैं चौका बर्तन का काम करने लगती हैं और बाकी बचे लड़के शराब, जुए व लौंडियाबाजी में रम जाते हैं।"3

इस कहानी के माध्यम से लेखक प्रसार माध्यमों पर भी तीखा वार करता है। इन प्रसार माध्यमों के कारण बढ़ते शोषण व अत्याचार पर प्रकाश डाला है। "तिस पर गुड़ का बाप कोल्हू है यह टेलीविजन... इस ससुरे के नंगनाच ने पूरी बस्ती को मुहल्ला मुहब्बत वाला बना डाला है। कल हमारे मुहल्ले का एक किशोर लड़का आठ साल की मासूम बच्ची से मुंह काला करने जा ही रहा था कि बंगले पर काम करने गई लड़की की मां घर लौट आई नहीं तो अनर्थ ही हो गया होता।"4

इस कहानी में प्रेम को परिभाषित करता हुआ लेखक अपने समय के प्रेम और आज की युवापीढ़ी प्रेम के अंतर को कुछ इस तरह दर्शाता है- "तस्वीर को देख मैं गहरे पशोपेश में

डूब गया था.. क्या यह प्रेम है? मैं दिग्भ्रमित-सा हो गया था। प्रेम मैंने भी किया था। उसमें यूं डूबकर जिया था जैसे कोई गोताखोर समुद्र में उतरने के बाद बाहर निकलना भूल जाए। परंतु अपने प्रेम का मैंने कभी इस तरह सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं किया था। मुझे अपने प्रिय का अहित और उसकी बदनामी कतई पसंद नहीं थी। अगरबत्ती की तरह धीरे-धीरे चुपचाप जलते हुए राख हो जाना और अपने पीछे भीनी-भीनी सुगंध छोड़ जाना मेरी नजर में प्रेम यही था। लेकिन यह तस्वीर... यूं लग रहा था जैसे दो जलते हुए जिस्म पिघलकर एक दूसरे में समा जाने को आतुर हों।"5

आज की युवापीढ़ी में न आगे-पीछे की सोच है न परिणाम की फिक्र है। इस पर लेखक ने व्यंग्य किया है। "बाद में पता चला था कि मेरे अंजू के घर से लौटने के दो दिन बाद अंजू मौका मिलते ही जीवन के साथ घर से भाग निकली थी। उसके पापा और बड़े भाई दिन भर की गर्दिश भरी भागदौड़ के बाद बड़ी मुश्किल से उसे जतिन के एक दोस्त के घर से बरामद करवा लाए थे। अगले दिन सुखदेव कर्ज काढ़ कर अपने पूरे परिवार को लेकर गांव चला गया और चौदह वर्षीय अंजू का गौना निपटाकर ही वापस लौटा था।"6

अमरीक सिंह दीप जी ने इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि गरीबी के कारण स्त्री-जीवन, आधुनिक समाज निराशा, यह सब परिस्थितियां स्त्री के जीवन को और जटिल बना देती हैं। कहानीकार इस ओर पलायन, विद्रोह बालविवाह से उत्पन्न परिस्थितियां,

अत्याचार जैसे सामाजिक पहलुओं कहानी के माध्यम से गरीबी, स्त्री-शिक्षा, बेरोजगारी की वजह से ग्रामीण लोगों का नगर की को एक दूसरे से जोड़ा है।

अमरीक सिंह दीप जी ने काली बिल्ली कहानी के माध्यम से कुछ मलिन बस्तियों को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया है। "चीरहरण भैया जी. हमारे मुहल्ले के बारे में इलाके की पुलिस का क्या कहना है, जानते हैं? यह रंजीतपुरवा नहीं छिनारपुरवा है। हमारे मुहल्ले की हर जवान हो रही लडकी की हालत चील के घोसले में मांस जैसी है। हमारे पड़ोस में एक विधवा औरत तीन जवान बेटियों के साथ रहती है। एक रात कोई शोहदा उसके घर के दरवाजे पर एक कागज चिपका गया... यहां माल मिलता है- बडी पचास रुपये में और छोटी सौ रुपये में और सुनेंगे।"7

हमारे देश में कुछ गरीब बेटियों के पिता की बेबसी इतनी बढ़ गई है कि न चाहते हुए भी बेटियों का बाल विवाह करने पर मजबूर हैं। "वे देश के कानून को शिरोधार्य कर बेटी की अट्ठारह वर्ष की आयु होने तक इन बूचड़खाने जैसी बस्तियों में बेटियों को बचाते रहें। अपनी इज्जत-आबरू को भूलकर रेत में सिर गड लें? या फिर पांडवों की तरह बेटियों का चीरहरण होते देखते रहें? या फिर देश के कानून को ताक पर रखकर कम उम्र में उनके विवाह कर अपनी इज्जत आबरू की रक्षा करें।"8

अमरीक सिंह दीप जी ने इस कहानी में सरकार द्वारा अपनाई गई उदारीकरण की नीति के सच को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया है। "सच तो यह है कि इस देश में आए

उदारीकरण ने गरीब आदमी से उसका रोजगार छीनकर उसके पेट पर लात ही नहीं मारी, बल्कि शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी जनसुविधाओं का बाजारीकरण कर गरीब आदमी के बच्चों का भविष्य भी खा लिया है। गरीब आदमी न घर का रहा और न घाट का।"9

"अंजू का पापा सुखदेव वर्षों से एक बल्ब फैक्ट्री में बल्ब बनाने का काम करता है। जब से शहर में बिजली की कटौती शुरू हुई है तब से दोपहर बाद कहीं जाकर बल्ब का काम शुरू हो पाता है। दोपहर बाद से रात आठ बजे तक ठेकेदारी के अंतर्गत वह मुश्किल से तीस-चालीस रुपये का काम कर पाता है। भूमंडलीकरण के चलते चीन से आने वाली बिजली की सस्ती झालरों ने शहर की छोटी बल्ब बनाने वाली फैक्ट्रियों को बंदी के कगार पर ला खड़ा किया है। इधर अंजू की मम्मी पुष्पा रोज सुबह शाम पांच-छह घरों के जूठे बर्तन मांज कर भी हजार रुपये से ऊपर नहीं कमा पाती। ऐसे में नंगी नहाए क्या और निचोड़े क्या?"10 यह सब गरीब बस्तियों का कड़वा सच है। पत्र-पत्रिकाओं में दिए गए विज्ञापन जैसे- बाल विवाह कानूनन जुर्म है, इसमें भागीदार होकर अपराधी न बनें। बेटियों का कल बचाएं। क्या यह सब विज्ञापन-नारे बेटियों को बचा पाएंगे? बालविवाह पर कानून बना देने से यह प्रथा खत्म नहीं होगी। जरूरत है स्त्री-शिक्षा और गरीबों की गरीबी दूर करने की।

अमरीक सिंह दीप की 'काली बिल्ली' कहानी की भाषा एकदम बहते पानी जैसी है। जिस वर्ग की कहानी है, उसी वर्ग की भाषा भी है। लेखक ने इस कहानी को कुछ-कुछ फ्लैशबैक शैली में प्रस्तुत किया है। इस शैली में पाठक की रोचकता और उत्सुकता बनी

रहती है। अमरीक सिंह दीप जी ने इस कहानी में संदर्भानुसार कहावतों का प्रयोग करके भाषा के सौंदर्य को बढ़ाया है। अमरीक सिंह दीप की 'काली बिल्ली' कहानी में कहावतें कुछ इसतरह प्रस्तुत की गयी हैं-

"जिसके जहां सींक समाए।"11

"मरी आहत आत्मा कराह उठी।"12

"अगरबत्ती की तरह धीरे-धीरे चुपचाप जलते हुए राख हो जाना और अपने पीछे भीनी-भीनी सुगंध छोड़ जाना।"13

अमरीक सिंह जी की इस कहानी में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए- "काली बिल्ली रसोई घर की चौखट से सटकर खड़ी रसोई घर के अंदर झांक रही है। जैसे किसी शिकार की तलाश में हो। पत्नी उसे दुरदुरा रही है। लेकिन वह बेशर्मी से हंसे जा रही है- बेहद शातिर किस्म की ढीठ हंसी। जब वह हंसती है तो उसके दांतों की सफेद दमकती लड़ियों से हंसी आतशी अनार की तरह झरती है। उसकी बड़ी-बड़ी बातूनी आंखें नक्षत्रों की तरह चमकने लगती हैं। और एक सम्मोहन रच डालती हैं। इस जादई सम्मोहन से बचने का बूता बहने में भी नहीं है।"14

प्रस्तुत कहानी में गालीगलौज का प्रयोग संदर्भानुसार हुआ है। उदाहरण के तौर पर- "हरामजादी कुतिया ! मेरे खानदान की इज्जत मिट्टी में मिलाकर अब मक्कर काट रही है। आज मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा। काटकर फेंक दूंगा।"15

इस कहानी में संदर्भानुसार वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तरी, संवादात्मक, शैलियों का प्रसंगानुसार प्रयोग हुआ है जिससे कहानी में लचीलापन आ गया है।

बहुमुखी प्रतिभाशाली कहानीकार अमरीक सिंह दीप ने 'काली बिल्ली' कहानी में समाज में विघटित और क्षरित होते हुए जीवन-मूल्यों, स्थितिगत अंतर्विरोधों और वस्तुतः आर्थिक संकट, फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूरों, घरों में झाड़ू-पोछा बर्तन मांझने वाली स्त्रियों, गरीबी में दबती हुई बेटियों की दयनीय स्थिति को सामाजिक संदर्भ में पकड़ने की कोशिश की है। गरीबी, प्रेम, स्त्रीशिक्षा, विद्रोह, अनमेल विवाह, बालविवाह, निम्नवर्गीय लोगों की मजबूरी आदि को पाठक के सामने रखा है। उदारीकरण से बढ़ती हुई गरीबी, बेरोजगारी, काम की तलाश में निकले ग्रामीण लोग, बढ़ती महंगाई के कारण बढ़ती मलिन बस्तियां, इन मलिन बस्तियों में स्त्रियों पर बढती शोषण, अत्याचार जैसे सामाजिक रूढ़ियों को बहुत ही खूबी से प्रस्तुत किया गया है। लेखक इन रूढ़ियों का निस्सहाय चश्मदीद गवाह बनकर रह गया है। लेखक ने अंदर के आक्रोश को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया है- "काली बिल्ली के साथ जो हो रहा है या हो चुका है, उसका चश्मदीद गवाह हूं। उसकी जिंदगी के साथ खिलवाड़ हो रहे हैं, मूकदर्शक बना मैं उसका तमाशा देख रहा हूँ। क्यों कुछ कर नहीं रहा?

अंतर्मन कराह उठा... क्या कर सकते हो तुम? क्या है तुम्हारे हाथ में तुम कोई सरकार या न्यायपालिका नहीं हो। महज एक अदने से संवेदनशील लेखक हो। कलम के अतिरिक्त कोई दूसरा हथियार नहीं है तुम्हारे पास। इसी के बल पर जो कुछ करना हो, कर सकते हो तुम। लेकिन इस हथियार की औकात सरकार ने अपने कारखानों और पंजीपतियों को उतारकर खाली म्यान भर की रहने दी है। खाली म्यान से न कोई युद्ध जीता जा सका है और न कोई क्रांति संभव हई है। "16

संदर्भ:

1. अमरीक सिंह दीप - काली बिल्ली, आत्मकथ्य, पृ. VIII
2. वही, पृ. IX
3. अमरीक सिंह दीप: काली बिल्ली, पृ. 15
4. वही, पृ. 20
5. वही, पृ. 22
6. वही, पृ. 22
7. वही, पृ. 27
8. वही, पृ. 27
9. वही, पृ. 22

10. वही, पृ. 9

11. वही, पृ. 23

12. वही, पृ. 27

13. वही, पृ. 15

14. वही, पृ. 15

15. वही, पृ. 25

16. वही, पृ. 18